

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल

सम्पर्क सूत्र: 8756390767

वायो तव प्रपृच्छती धेना जिगाति दाशुषे ।

उरुची सोमपीतये ॥३॥

(ऋग्वेद १.२.३)

पदार्थ (शब्दार्थ)

वायो: हे वायु! / हे वेदवाणी के प्रकाशक ईश्वर! / हे प्राणवायु!

तव: तुम्हारी

प्रपृच्छती: उत्तम प्रकार से सम्पर्क कराने वाली / सोम के गुणों का वर्णन करने वाली (प्र + पृच्छ)

धेना: वाणी / वेदवाणी

जिगाति: जाती है / प्राप्त होती है

दाशुषे: दान देने वाले / हविष्य देने वाले यजमान के प्रति / विद्या ग्रहण करने वाले पुरुषार्थी के प्रति

उरुची: बहुत से यजमानों तक पहुँचने वाली / अनेक विद्याओं का ज्ञान कराने वाली (उरु + अञ्च)

सोमपीतये: सोमपान के लिए / उत्पन्न हुए पदार्थों के रसपान व आनन्द के लिए

१. आचार्य सायण का भाष्य (कर्मकाण्ड / आधियज्ञिक पक्ष)

हे वायुदेव! तुम्हारी (उरुची) अनेक सोमयाजी यजमानों के पास जाने वाली और (प्रपृञ्चती) सोम के गुणों का भली-भाँति वर्णन करने वाली (धेना) वाणी, (सोमपीतये) सोमपान करने के लिए (दाशुषे) हविष्य अर्पण करने वाले यजमान के पास (जिगाति) जाती है।

भावार्थ: वायु की ध्वनि मानो यजमान से यह कहती है कि "हे यजमान! तुमने जो सोम अर्पित किया है, मैं उसे पीने के लिए आ रहा हूँ।"

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक पक्ष)

ईश्वर पक्ष (आध्यात्मिक): हे वेदवाणी के प्रकाशक जगदीश्वर! आपकी यह चारों वेदरूप वाणी (धेना), जो समस्त विद्याओं से सम्पर्क कराती है (प्रपृञ्चती) और अनेक विद्याओं का ज्ञान कराती है (उरुची), वह विद्या-दान करने वाले व निष्कपट भाव से विद्या ग्रहण करने वाले पुरुषार्थी मनुष्य (दाशुषे) को, उत्पन्न हुए पदार्थों के रसपान/आनन्द (सोमपीतये) के लिए प्राप्त होती है।

भौतिक पक्ष (वायु): प्राणवायु (पवन) के संयोग से ही उच्चारण करने वाले मनुष्य की वाणी (धेना) उत्पन्न होती है, जो शब्दों का उच्चारण सिद्ध करती है और अनेक अर्थों का बोध कराती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

महर्षि दयानन्द के भौतिक भाष्य के अनुसार, यह मन्त्र ध्वनि विज्ञान (Acoustics) और मानव स्वर-तन्त्र (Vocal mechanics) का मूलभूत वैज्ञानिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है:

- माध्यम के रूप में वायु (Air as a Medium):** मन्त्र स्पष्ट करता है कि वायु के बिना 'धेना' (वाणी या ध्वनि) का अस्तित्व नहीं है। ध्वनि तरंगों को गमन करने शारीरिक वायु की आवश्यकता होती है। निर्वात (Vacuum) में ध्वनि यात्रा नहीं कर सकती।
- स्वर-उत्पत्ति (Phonation):** मनुष्य के फेफड़ों से निकलने वाली प्राणवायु (वायु) जब स्वर-तन्त्रियों (Vocal cords) से टकराती है (प्रपृञ्चती - सम्पर्क करती है), तभी ध्वनि उत्पन्न होती है।
- ध्वनि का प्रसार (Dispersion):** यह वायु-जनित ध्वनि (उरुची - विस्तृत होने वाली) चारों दिशाओं में फैलकर श्रोताओं के कानों तक पहुँचती है। अतः वायु ही वाक्-शक्ति का मूल भौतिक कारण है।

व्याकरणिक व्युत्पत्ति (Grammar Derivation)

प्रपृञ्चती: 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'पृच्' धातु से 'शतृ' प्रत्यय है। सायण के अनुसार अष्टाध्यायी सूत्र 'शतुरनुमः नदाजादी' (पा.सू. 6.1.173) से 'डीप्' प्रत्यय होकर 'प्रपृञ्चती' बना है। इसका अर्थ है - प्रकर्षण सोमसम्पर्क कुर्वती।

धेना: निघण्टु (1.11.39) में वाक् (वाणी) के 57 नामों में 'धेना' भी पठित है।

जिगाति: 'गा' (गति) धातु से बना है। निघण्टु (2.14.113) के 122 गतिकर्मों में 'गाति जिगाति' पठित है। यह जुहोत्यादि गण की धातु है, अतः द्वित्व हुआ है।

दाशुषे: 'दाश्' धातु (दान करना) से 'क्वसु' प्रत्यय। यह चतुर्थी विभक्ति का एकवचन है। 'गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यो...' (पा.सू. 2.3.12) सूत्र से गत्यर्थक धातु (जिगाति) के योग में कर्म में चतुर्थी विभक्ति हुई है।

उरुची: 'उरु' शब्द उपपद रहते 'अञ्च्' धातु से बना है। 'षिद्गौरादिभ्यश्च' (पा.सू. 4.1.41) सूत्र से गौरादि गण में होने के कारण 'डीष' (या डीप) प्रत्यय हुआ है।

सोमपीतये: 'सोमस्य पीतिः तस्यै' (षष्ठी तत्पुरुष) अथवा 'सूयन्ते ये पदार्थाः तेषां पीतिः' (महर्षि दयानन्द के अनुसार)। यहाँ पूर्वपद प्रकृतिस्वर का विधान है।

मन्त्र विनियोग (Mantra Viniyog)

ऋषि: मधुच्छन्दा वैश्वामित्र

देवता: वायु

छन्द: गायत्री

स्वर: षड्ज

कर्मकाण्ड विनियोगः

सोमयाग में ऐन्द्रवायव ग्रह के अन्तर्गत वायु देवता को सोम अर्पण करते समय इस मन्त्र का पाठ किया जाता है।

सामान्य विनियोगः

प्राणायाम के माध्यम से वाक्-सिद्धि प्राप्त करने, विद्या-अध्ययन का आरम्भ करने तथा ईश्वरीय वेदवाणी (ज्ञान) की प्राप्ति के लिए प्रार्थना हेतु इसका उपयोग किया जाता है।